‘शबद’

भाग - ५

शराब के दो अलग – अलग स्वरूप हैं : –

1. **स्थूल रूप : –** रंग – बिरंगा, कड़वा – कसैला घोल (alcoholic solution) है ।

2. **सूक्ष्म रूप : –** जब शराब को पिया जाये, तो इस का मन, तन, बुद्धि पर अनोखा सा असर होता है, जिस को **‘सरूर’** कहा जाता है ।

सरूर के दूसरे स्वरूप में, शराब का **पहला स्वरूप** समा जाता है या विलुप्त हो जाता है ।

पहला स्थूल रूप : – देखने, बोलने, सुनने और कल्पना तक सीमित है ।

दूसरा सूक्ष्म रूप : – शारीरिक, मानसिक और मनोभावों में प्रवृत्त होता है, जिस के द्वारा कोई **अनोखी –**

खुशी

चाव

उमाह

खेड़ा

फुर्ती

बेपरवाही

मस्ती

नशीली आँखें

चमकता चेहरा

थथला बोल

हिम्मत

अहम

का प्रकटाव होता है ।

शराब के पहले स्वरूप का ज्ञान – फोकट दिमागी कल्पना तक सीमित है ।

शरीर के अंदर जा कर 'शराब' का स्वरूप बिल्कुल बदल जाता है और तन – मन में ऊपर दर्शाया अनोखा 'सरूर' उत्पन्न होता है । दूसरे **शब्दों में शराब हमारे अंदर जा कर, 'सरुर' का रूप धारण कर लेती है ।**

'शराब' – शब्दों, बोली, ख्यालों तक सीमित है, परन्तु

'सरूर' – शरीर, मन – बुद्धि की **रग – रग में धँस, बस, रसरूप बन कर** मानसिक **जीवन के हर क्षेत्र में अपना अलौकिक जलवा दिखलाता है** या दूसरे शब्दों में, शराब का 'सरूर' **शराब के आंतरिक अवगुणों का प्रकटाव है ।**

यह शराब का सरूर तो अस्थायी है, थोड़े समय बाद उतर जाता है और बाद में **इसकी कमी प्रतीत होती है** – जिससे शराबी की हालत पहले से **भी बुरी हो जाती है ।**

इस के 'विपरीत' – 'शबद' या 'नाम' का आत्मिक 'सरूर' हमेशा इकसार कायम रहता है, जो जिज्ञासु को नित्य नवीन 'रस – रंग' में मस्त किये रहता है । इस ईश्वरीय प्रकाश – रूप, तत् – शबद की खुमारी दिन – रात चढ़ी रहती है ।

हरि रसु पीवत सद ही राता ।।
आन रसा खिन महि लहि जाता ।।
हरि रसु के माते मनि सदा अनंद ।।
आन रसा महि विआपै चिंद ।। १ ।।
हरि रसु पीवै अलमसतु मतवारा ।।
आन रसा सभि होछे रे ।। १ ।। रहाउ ।। (पृ. – ३७७)

हाँ जी – अन्तर आत्मा में **'गुर शबद' की 'गर्जना'** अथवा **'प्रकाश' होने से** मन, तन और आत्मा में –

रस – भरी झनझनाहट

आनंद की थरथराहट

आत्म – हिचोले

आत्म रस का आश्चर्यजनक शोर

आत्म महा रस

आत्म मौज

आत्म लहर

मीठी आत्मिक थरथराहट
मस्ती भरी "सदा हुशियारी"
सच्ची–खुमारी
चरण कमल की मौज

स्वतः ही उत्पन्न होती और प्रवृत्त होती है ।

इस उच्च उत्तम, पवित्र आत्मिक अवस्था की प्राप्ति के लिए 'तत् शबद' को –

सुनने
बूझने
सीझने
चीन्हने
पहचानने
विचार करने
कमाने
अनुभव करने

की अत्यन्त आवश्यकता है ।

हम गुरबाणी–रूप 'शबद' को अपने स्थूल कानों से ही सुनने में संतुष्ट हैं और इसी को आत्मिक मंजिल समझे हुए हैं ।

परन्तु वास्तव में गुरबाणी अनुसार, 'तत् शबद', केवल आंतरिक अनुभवी 'सुरति' रूपी कानों द्वारा सुना या अनुभव किया जा सकता है ।

ओथै अनहद सबद वजहि दिनु राती
गुरमती सबदि सुणावणिआ ॥ (पृ. १२४)

पिरु रीसालू ता मिलै **जा गुर का सबदु सुणी ॥** (पृ. १०)

सबदि सुणीऐ सबदि बुझीऐ सचि रहै लिव लाइ ॥ (पृ. ४२४)

जीवन मुकतु जा सबदु सुणाए ॥ (पृ. १३४३)

जब तक हमारी वृत्ति–सुरती 'बाहर मुखी' है, हमने इन शारीरिक कानों द्वारा 'शबद' अथवा गुरबाणी सुननी है, परन्तु जब 'शबद–सुरति' के मिलाप द्वारा सुरति 'अन्तरमुखी' हो जाए, तो अंतर–आत्मा में 'अनुभव' द्वारा 'अनहद धुनि' (Divine Music) सुनाई देती है, जिसे –

शबद–सुणी

नाम धुनि

अनहद नाद

अनहद झुनकार

अनहद शबद

बताया गया है ।

हमारे शारीरिक कान तो **केवल शब्दों वाली बोली या बाणी सुन सकते हैं,** परन्तु आत्म प्रकाश रूपी **'तत्–शबद', नाम, धुनि आदि को सुनने में असमर्थ हैं ।**

सूर्य के उदय होते ही रात्रि के अंधकार के सभी अवगुण तथा क्लेश, सहज स्वभाव स्वतः ही अलोप हो जाते हैं । दूसरी ओर 'प्रकाश' होने से सूर्य की **सभी बरकतें स्वतः प्राप्त हो जाती हैं ।**

ठीक इसी प्रकार **'शबद' के अंतर–आतमा में अनुभव प्रकाश द्वारा, जीव को अनेक शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बरकतें स्वतः ही प्राप्त हो जाती हैं ।**

इन अनेक आत्मिक बरकतों और बख्शिशों में से, कुछ की संक्षेप विचार यहाँ की जाती है ।

गुरबाणी में 'अह्म' को **मानसिक दीर्घ रोग** बताया गया है । **अह्म का कोई अस्तित्त्व नहीं है, यह केवल मन का भ्रम–भुलाव है** । माया के अंध गुबार अथवा **अज्ञानता में से अह्म उत्पन्न होता है । यह अज्ञानता भगवान को भुला कर विमुख होने से उत्पन्न होती है ।**

अह्म ही, अन्य समस्त विकारी आदतों का **'मूल–कारण' है** । इस लिए इसे **'दीर्घ रोग'** कहा गया है । यह दीर्घ रोग ही जीव के समस्त शारीरिक और मानसिक **दुख–क्लेश तथा बंधनों का मूल कारण है ।**

दिमागी चतुराईयों, कर्म–कांडों आदि से अह्म का त्याग नहीं हो सकता । गुरबाणी में इस **अह्म को मारने या त्यागने का एकमात्र साधान 'शबद' का 'प्रकाश' अथवा 'नाम' ही बताया गया है ।**

सबदे हउमै मारीऐ सचै महलि सुखु पाइ ॥ (पृ. ४२६)

आस अंदेसे ते निहकेवलु **हउमै सबदि जलाए ॥** (पृ. ४६८)

गुर सबदी चूकै अभिमानु ॥ (पृ. १२५९)

गरुड़ु सबदु मुखि पाइआ हउमै बिखु हरि मारी ॥ (पृ. १२६०)

हउमै मेरा सबदे खोई ॥ (पृ. १३४२)

प्रभु को रीझाने के लिए, जीव को दैवीय गुणों का श्रृंगार करना जरुरी है और समस्त दैवीय गुण साध–संगति में 'शबद' की कमाई द्वारा ही ग्रहण किए जा सकते हैं ।

मनु तनु सउपे कंत कउ **सबदे धरे पिआरु** ॥ (पृ. ८९)

पिर कै सहजि रहै रंगि राती **सबदि सिंगारु बणावणिआ** ॥ (पृ. १२९)

सचि रतीआ सोहागणी **जिना गुर कै सबदि सीगारि** ॥ (पृ. ४२७)

सबदि सचै रंगु लालु करि भै भाइ सीगारु बणाइ ॥ (पृ. ७८६)

पिछले किए कर्मों अनुसार, हर एक मनुष्य को अपने जीवन में अनेक दुख–क्लेश भुगतने पड़ते हैं । परंतु साधारण मनुष्य इन दुखों से बहुत जल्दी परेशान एवं बेचैन हो जाता है ।

केतिआ दूख भूख सद मार ॥ एहि भि दाति तेरी दातार ॥ (जपुजी पृ. ५)

इन पंक्तियों के अनुसार वास्तव में 'दुख–भूख' 'दवाई' के रूप में, मनुष्य के लिए 'कल्याणकारी' सिद्ध होते हैं । इस 'सच्चाई' या **भेद को गुरशबद की कमाई द्वारा ही बूझा जा सकता है ।**

"तू करहि सु सचे भला है गुर सबदि बुझाही ॥" (पृ. ३०१)

"सबदि रते से निरमले चलहि सतिगुर भाइ ॥" (पृ. २३४)

प्रत्येक मनुष्य, किसी न किसी परिवारिक, समाजिक, राजनीतिक और धार्मिक 'मोह' के **दलदल में फँसा हुआ है** । 'मोह माया' के बंधन केवल **'प्रभु–वैराग्य' ही तोड़ सकता है । यह 'वैराग्य' 'शबद' की कमाई द्वारा ही उतपन्न होता है ।**

गुरमती मनु निज घरि वसिआ **सचै सबदि बैरागो राम** ॥ (पृ. ५६८)

जो सबदि राते महा बैरागी सो सचु सबदे लाहा हे ॥ (पृ. १०५४)

सबदि रते पूरे बैरागी ॥ (पृ. १३३२)

हर जीव अपनी प्रशंसा चाहता है, जिस के लिए वह अनेक धार्मिक कर्म–कांड या धन–यौवन का सहारा लेता है। परंतु **यह सांसारिक प्रशंसा झूठी है जो शीघ्र ही विलुप्त हो जाती है**। वास्तव में साधा संगति में, **'शबद' की कमाई द्वारा ही 'नाम की बढ़ाई'** और दरगाह में सच्चा **'मान' या सम्मान प्राप्त होता है**।

सचै सबदि सची पति होई ॥ (पृ. १०४६)

नानक सहजि मिलै जगजीवनु **गुर सबदी पति पाइदा ॥** (पृ. १०३७)

सचै सबदि पति ऊपजै सचे सचा नाउ ॥ (पृ. ६९)

सभी जीवों के सभी काम, प्रयत्न, रीझ, उत्साह, ध्यान, 'धन–यौवन' और 'मैं–मेरी' में ही **'परिक्रमा' करते रहते हैं**, जिस कारण वह स्वतः **'मैं–मेरी' में गलतान हो कर माया में लिवलीन रहते हैं**।

ठीक इसी तरह गुरमुख जन गुर शबद की कमाई करते हुए शबद में लीन हो जाते हैं और माया से अलिप्त रहते हैं।

गुरु कै सबदि सचि लिव लाइ ॥ (पृ २३०)

सचा सबदु रवै **घट अंतरि सचे सिउ लिव लाई ॥** (पृ. ९०९)

गुरु कै सबदि एक लिव लागी तेरै नामि रते तृपतासी ॥ (पृ. १०१२)

सदा अलिपतु रहै गुर सबदी साचे सिउ चितु लाइदा ॥ (पृ. १०६१)

हरि रखे से उबरे **सबदि रहे लिव लाइ** ॥ (पृ. १४१७)

सांसारिक अग्नि–शोक–सागर अथवा **मायकी दलदल में से केवल 'प्रभु–प्रेम' ही 'जीव' को निकाल सकता है**। यह 'प्रभु–प्यार' गुरमुख–प्यारों अथवा 'साध–संगति' में विचरण करते हुए **'शबद–सुरति' की कमाई द्वारा ही उत्पन्न हो सकता है**।

सबद सेती मनु मिलिआ **सचै लाइआ भाउ ॥** (पृ. ९२०)

जिस नो प्रेमु मंनि वसाए । साचै सबदि सहजि सुभाए ॥ (पृ. १०१६)

सुणि सबदु तुमारा **मेरा मनु भीना ॥** (पृ. १११७)

प्रेम पदारथु जिन घटि वसिआ सहजे रहे समाई ।।
सबदि रते से रंगि चलूले राते सहजि सुभाई ।। (पृ. १२३४)

सचै सबदि मनु मारिआ **अहिनिसि नामि पिआरि ।।** (पृ. १२८४)

गुर कै सबदि सलाहीऐ अंतरि प्रेम पिआरु ।। (पृ. १२८६)

प्रभु गुणों का सागर है । साध – संगति में मन – वचन – कर्म **द्वारा शबद की कमाई करने से,** जिज्ञासु स्वयं ईश्वरीय गुणों की 'खान' बन जाता है

हरि के चरन अराधीअहि **गुर सबदि रतनागरु ।।** (पृ. १३१८)

तू गुणदाता सबदि पछाता **गुण कहि गुणी समाणे ।।** (पृ. ६०१)

गुर ते साति भगति करे दिनु राती
गुण कहि गुणी समावणिआ ।। (पृ. ११७)

शबद की कमाई द्वारा यह निकम्मी और विकारी देही, कंचन सोने की तरह **निर्मल, कीमती और सुंदर बन जाती है ।**

हरि मंदरु सबदे सोहणा कंचनु कोटु अपार ।। (पृ. १३४६)

काइआ कंचनु सबदु वीचारा ।। (पृ. १०६४)

शबद की कमाई द्वारा ही सूक्ष्म और अदृष्ट प्रभु के **'आस्तित्व' या 'हस्ती'** पर जिज्ञासु का मन **पसीजता** (स्थिर होता) और **मानता है ।**

सबदि पतीजै अलख अभेवा ।। (पृ. १०२४)

इहु मनु भीजै सबदि पतीजै ।। (पृ. १०३१)

सबदु बीचारि राम रसु चाखिआ नानक साचि पतीणे ।। (पृ. ११२६)

गुर सबदे मनु मानिआ अपतीजु पतीणा ।। (पृ. १४०७)

मन अत्यन्त **'चंचल'** और **असाध्य** है । इस को 'शबद' की कमाई द्वारा ही **साधा जा सकता है** और शांति आ सकती है ।

नानक दृसिट दीरघ सुखु पावै **गुर सबदी मनु धीरा ।।** (पृ. ११०७)

गुर सबदी वेखि विगसिआ **अंतरि साँति आई ।।** (पृ. १२५१)

बंधन तोड़े मुकति घरि रहै ।।
गुर सबदी असथिरु घरि बहै ।। (पृ. १२६२)

मायिकी **‘भ्रम–भुलाव’ कारण** ‘जीव’ अपनी सीमित बुद्धि द्वारा सयानपें घोट कर सुख की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है, परन्तु **उलटा ‘करम–बद्ध’ हो कर दुख भोगता है और यम के वश में आ जाता है ।**

परंतु, यदि जीव, ‘साध–संगति’ में विचरण करते हुए **‘शबद’ की कमाई करे** तो उसे **‘विवेक बुद्धि’** अथवा ‘अनुभवी ज्ञान’ या **‘आत्मिक–सूझ’** प्राप्त हो जाती है – जिस द्वारा उसे सही **आत्मिक ‘जीवन–सेध’ मिलती है ।** इस तरह वह जिज्ञासु गुरू घर में ‘वडहंस’ बन जाता है ।

मनु मोती सालु है गुर सबदी जितु हीरा परखि लईजै ।। (पृ. १३२५)

जगु खोटौ सचु निरमलौ **गुर सबदी वीचारि ।।**
ते नर पिरले जाणीअहि **जिन अंतरि गिआनु मुरारि ।।** (पृ. १३३१)

सबदि रते वड हंस है सचु नामु उरि धारि ।। (पृ. ५८५)

गुरमुखि वंसी परम हंस सबद सुरति गुरमति अडोला ।
खीरहु नीर निकालदे गुरमुखि गिआनु धिआनु निरोला । (वा. भ. गु ३०/४)

भाउ भगति उपदेसु करि साध संगति सचखंडि वसाए ।
मान सरोवरि परमहंस गुरमुखि सबद सुरति लिव लाए ।। (वा. भ. गु. १२/१८)

‘धन पिर का इक ही संगि वासा ।। अनुसार – ‘जीव’ रूप ‘आत्मा’ और ‘परमात्मा’, हृदय रूपी सेज पर आठों पहिर इकट्ठे रहते हैं, परन्तु **मायिकी विचारों और विकारों द्वारा पति–परमात्मा भूला रहता है । ‘साध–संगति’ में मन–वचन–कर्म द्वारा शबद की कमाई करने से**, पति परमात्मा की ‘याद’ हृदय में बसती है । इस तरह लगातार **प्रेम–भरी–याद या स्मरण द्वारा ‘धन–पिर’ (परमेश्वर) का अंतर–आत्मा में मेल होता है ।**

गुरमुख कामणि बणिआ सीगारु ।।
सबदे पिरु राखिआ उर धारि ।। (पृ. १२७७)

सबदि सवारी साचि पिआरी ।।
साई सोहागणि ठाकुरि धारी ।। (पृ. ६३३)

अनेक दुखों क्लेशों और चिंताओं से मन और तन मुरझाया रहता है और प्रीत, रस, चाव, खिड़ाव से वंचित रहता है । परंतु **शबद की कमाई** करने से, मन में सदैव दिव्य ख्याल और आनन्दमयी आत्मिक मनोभाव अपने आप

उत्पन्न होते रहते हैं और मन हमेशा **प्रेम–रंग–रस में मौज करता हुआ और खिला रहता है ।**

सदा बसंतु गुर सबदु वीचारे ॥ (पृ. ११७६)

छाव घणी फूली बनराइ ॥ गुरमुखि बिगसै सहजि सुभाइ ॥(पृ. ११७३)

नानक **नामे सभ हरीआवली गुर कै सबदि वीचारि ॥** (पृ. १२८५)

गुर कै सबदि इहु मनु गउलिआ
हरि गुणदाता नामु बरवाणै ॥ (पृ. ११७५)

'दुरवु दरवाजा रोहु ररववाला, आस अंदेसा दुइ पट जड़ै ।'

अनुसार 'आसा' और अंदेसा' दसवें द्वार के दरवाजे के दो बड़े–बड़े तरव्ते हैं, जो बहुत मजबूत हैं। मन के 'बज्र कपाट' केवल साध–संगति में अटूट शबद की कमाई द्वारा ही रवुलते हैं ।

बजर कपाट न रवुलनी **गुर सबदि खुलीजै ।** (पृ. ९५४)

बजर कपाट जड़े जड़ि जाणै **गुर सबदी खोलाइदा ॥** (पृ. १०३३)

इस तरह शबद की कमाई द्वारा जब वज्र कपाट रवुलते हैं, तो तीनों 'भवनों' या लोकों की सूझ या ज्ञान हो जाता है ।

सबदि पछानै तीने भउन ॥ (पृ. २२१)

मनुष्य अपने हर काम के लिए योजना बनाता और प्रयत्न करता है। इस चिंता में उसका मानसिक तनाव (mental tension) बना रहता है। परंतु जब शबद की कमाई द्वारा नाम की प्राप्ति हो जाती है, तो

'अचिंत कंम करे प्रभ तिन के जिन हरि का नाम पिआरा ॥'
अनुसार उस के हर कार्य की सार–संभाल प्रभु स्वयं करता है ।

नानक सबदु अपारु **तिनि सभु किछु सारिआ ॥** (पृ. ३२०)

टूटै गंठि पड़ै वीचारि ॥ **गुर सबदी घरि कारजु सारि ॥** (पृ. ९३३)

अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ (पृ. ९१७)

संत जनों की संगति में एकाग्रचित शबद द्वारा हरि के गुण गाने से ही 'अकथ–कथा' की सूझ आती है और प्रभु से मिलाप होता है ।

सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥ (पृ. ९४३)

अकथ कथा ले रहउ निराला ॥
एकु सबदु जितु कथा वीचारी ॥ (पृ. ९४३)

बूझहु गिआनी बूझणा एह अकथ कथा मन माहि ॥
सतिगुरु मिलै त जाणीऐ जाँ सबदु वसै मन माहि ॥ (पृ. १०९३)

संत जना वडभागी पाइआ हरि कथीऐ अकथ कहाणी ॥(पृ. ७७४)

समस्त संसार धन, यौवन, 'प्रभुता' आदि के आसरे ही संसार में बढ़प्पन पाने के लिए पागल हुआ फिरता है। धार्मिक क्षेत्र में भी बहुत लोग नाम-महिमा के लिए अनेक धार्मिक कर्म-कांड, जप, तप और अनेक साधनाएँ करते हैं। परंतु यह **'नाम-महिमा' केवल साध-संगति की सहायता से 'शबद' द्वारा अह्म त्यागने पर ही मिलती है।**

नानक ता कउ मिलै वडाई **जिसु घट भीतरि सबदु रवै ॥** (पृ. ९५२)

नानक गुरमुखि सबदु सम्हाले **राम नामि वडिआई ॥** (पृ. ११३२)

सबदु चीन्हि सहज घरि आवहु ॥
साचै नाइ वडाई पावहु ॥ (पृ. ८३२)

समस्त सांसारिक और धार्मिक श्रेणी का जीवन माया के तीन-गुणों में ही गुजरता है। परंतु परमगति या परमपद की प्राप्ति केवल 'साध- संगति' रूपी 'सच्ची-टकसाल' (पाठशाला) में शबद की कमाई द्वारा प्राप्त होती है।

अंमृत सबदु पीवै जनु कोइ ॥
नानक ता की परम गति होइ ॥ (पृ. ३९४)

गुरि सबदु दृड़ाइआ परम पदु पाइआ
दुतीअ गए सुख होऊ ॥ (पृ. ५३५)

जीव, मायिकी 'भवजल' के विकारों के **'भँवर' और 'चिंता के तूफानों'** में गोते खाता हुआ दुखी रहता है। इस **'अग्नि-शोक-सागर' अथवा भवजल से केवल हमारी 'सुरति' ही शबद के जहाज पर सवार हो कर पार हो सकती है।**

भउजलु बिखमु असगाहु गुर सबदी पारि पाहि ॥ (पृ. ९६२)

भवजलु **सबदि लंघावणहारु ॥** (पृ. ९४२)

सतिगुरू है बोहिथा सबदि लंघावणहारु ॥ (पृ. १००९)

इहु भवजलु जगतु सबदि गुर तरीऐ ॥ (पृ. १०४२)

जिनि किछु कीआ सोई जाणै **सबदु वीचारि भउ सागरु तरै ॥**
(पृ. १३४२)

अनुसार, 'शबद–सुरति' में लिवलीन हुए **गुरमुख प्यारों की आत्मिक–शक्ति द्वारा ही संसार टिका हुआ है ।**

तिथै अंमृत भोजनु सहज धुनि उपजै
जितु सबदि जगतु थंमि् रहाइआ ॥ (पृ. ४४१)

गुर शबद में प्रभु का नाम–रूपी– 'प्रेम–पदार्थ' ओत–प्रोत है । 'साध –संगति' रूपी सच्ची पाठशाला में, मन–वचन–कर्म द्वारा **शबद की कमाई करते हुए**, सहज ही गुरप्रसादि द्वारा, **'नाम' में समा जाते हैं ।**

नानक निरमल नादु सबद धुनि
सचु रामै नामि समाइदा ॥ (पृ. १०३८)

अनहत बाणी गुर सबदि जाणी हरि नामु हरि रसु भोगो ॥ (पृ. ९२१)

हमारे मन में से विकारी एवं मायिकी ख्याल, मनोभाव आदि अपने–आप, फुहारे की भांति फूटते रहते हैं, जो कि अत्यन्त परेशानी और मानसिक तनाव का कारण बनते हैं । साध संगति में **शबद की कमाई करने से हर ख्याल और मनोभाव को 'शबद' की दैवीय कलम चढ़ जाती है**, जिससे आठों पहिर **अनहद धुनि या रुनझुंकार का आनन्दमय, विस्मादमय एवं रसीला संगीत गूँजता है ।**

अनहद वाजे धुनि वजदे **गुर सबदि सुणीजै ॥** (पृ. ९५४)

गुर सबदि मेला ताँ सुहेला बाजंत अनहद बीणा ॥ (पृ. ७६७)

जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥
सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥ (पृ. २९५)

अनहद धुनी मेरा मनु मोहिओ अचरज ता के स्वाद ॥ (पृ. १२२६)

अज्ञानता और भ्रम कारण, दुविधा उत्पन्न होती है और दुविधा कारण विश्वास डाँवाडोल रहता है परंतु बख्शे हुए दृढ़ विश्वासी गुरमुख प्यारों के मार्गदर्शन अथवा **साध–संगति में, गुरशबद की कमाई द्वारा दुविधा एवं भ्रम दूर हो जाता है और जिज्ञासु आत्मिक अडोलता और सहज में निवास करता है ।**

सबदे राते सहजे माते अनदिनु हरि गुण गाए ॥ (पृ. ६०१)

सबदु चीनि् आतमु परगासिआ सहजे रहिआ समाई ॥ (पृ. ७५३)

गुर सबदे राता सहजे माता नामु मनि वसाए ॥ (पृ. ७७१)

सबदु चीनि् सहज घरि आवहु ॥ (पृ. ८३२)

गुर कै सबदि एहु मनु राता दुबिधा सहजि समाणी ॥ (पृ. १३५०)

अर्थात जब तक जिज्ञासु ससारिक आशा–तृष्णा की ओर से मरता नहीं, तब तक नाम की प्राप्ति नहीं होती । दूसरे शब्दों में **'साध–संगति' में शबद की कमाई करके ही मायिकी जीवन से 'मरते' हैं और आत्मिक जीवन या आत्म–मंडल में नया जन्म होता है ।**

सबदि मरै मनु मारि धंनु जणेदी माइआ ॥ (पृ. १२८६)

खिन महि मूए जा सबदु पछानिआ ॥ (पृ. ९३२)

सबदि मरहु फिरि जीवहु सद ही ता फिरि मरणु न होई ॥ (पृ. ६०४)

सबदि मुआ विचहु आपु गवाइ ॥ (पृ. ३६१)

सतिगुर कै जनमे गवनु मिटाइआ ॥ (पृ. ९४०)

जब जिज्ञासु की सुरति, मति, मन, बुद्धि, साध–संगति की **सच्ची–पाठशाला में शबद की कमाई द्वारा संवारी जाती है, तो उसके अंदर अनुभवी आध्यात्मिक ज्ञान उत्पन्न होता है ।**

सबदे उपजै अंमृत बाणी गुरमुखि आखि सुणावणिआ ॥ (पृ. १२५)

सबद सुरति लिवलीणु होइ अनभउ अघड़ घड़ाए गहणा ॥
(वा. भा. गु. १८/२२)

सतिगुर सबदी इहु मनु भेदिआ हिरदै साची बाणी ॥ (पृ १२५९)

शबद की कमाई करते हुए जिज्ञासु को अन्तर–आत्मा में **'निज–घर'** में निवास या 'सहज–समाधि' प्राप्त हो जाती है, जिससे उस की हर तरह की भटकन समाप्त हो जाती है।

सबदु सलाहहि से जन निरमल निज घरि वासा ताहा हे ॥ (पृ. १०५४)

गुर कै सबदि हउमै बिखु मारै ता निज घरि होवै वासो ॥ (पृ. ९४०)

सचु सबदु कमाईऐ निज घरि जाईऐ पाईऐ गुणी निधाना ॥(पृ. ४३६)

'जीव–रूपी' स्त्री, 'सुहागन' तब ही बन सकती है, जब वह **अवगुण त्याग कर, मन तन अर्पण करके, भय–भावना, नम्रता आदि के दैवीय गुणों का श्रृँगार करे।** परंतु **यह श्रृंगार, केवल साध–संगति में शबद की कमाई द्वारा ही किया जा सकता है।**

सबदि रती सोहागणी सतिगुर कै भाइ पिआरि ॥ (पृ. ९०)

ता सोहागणि जाणीऐ गुर सबदु बीचारे ॥ (पृ. ३३४)

सदा सोहागणि सबदु मनि भै भाइ करे सीगारु ॥ (पृ ७८७)

देही नो सबदु सीगारु है जितु सदा सदा सुखु होइ ॥ (पृ १०९२)

बाणी गुरू गुरू है बाणी .... ॥ (पृ ९८२)

इन पंक्तियों के अनुसार, **'गुरशबद' एवं 'गुरू' ओत–प्रोत हैं।** जैसे जैसे जिज्ञासु साध–संगति में **'शबद' की मन–वचन–कर्म द्वारा कमाई करता है,** वैसे–वैसे वह **गुरू के नज़दीक होता जाता है।** इस तरह वह सहज ही **गुरु का 'महल' प्राप्त कर लेता है।**

सबदे पतीजै अंकु भीजै सु महलु महला अंतरे ॥ ......
गुर सबदि मेला ताँ सुहेला बाजंत अनहद बीणा ॥
गुर महली घरि आपणै सो भरिपुरि लीणा ॥ (पृ ७६७)

गुर कै सबदि सहलु घरु दीसै ॥ (पृ ८६९)

पहले बताया जा चुका है कि, **परमात्मा के सारे गुण 'शबद' में मौजूद हैं । इस लिए 'शबद' भी सर्वव्यापक एवं 'सरब रहिआ परिपूर्ण' है ।**

सबदे रवि रहिआ गुर रूपि मुरारे ॥ (पृ. ११११२)

हरि जीउ वेखै सद हजूरि ॥ **गुर कै सबदि रहिआ भरपूरि ॥**(पृ. ११७३)

आनद मूलु रामु सभु देखिआ **गुर सबदी गोविदु गजिआ ॥** (पृ. १३१५)

सु सबदु निरंतरि निज घरि आछै
तृभवण जोति सु सबदि लहै ॥ (पृ. ६४५)

प्रभु **स्वयं निर्मल है** और उससे उत्पन्न **'शबद' और 'नाम' भी निर्मल है ।** परंतु, जीव का मन जगत की **मायिकी काल कोठरी के अंदर विचरण करता हुआ, काला एवं मैला हो जाता है । यह मैल** केवल लगातार **साध संगति करते हुए, शबद की कमाई द्वारा ही दूर होती है** और फिर **'मन' पवित्र और निर्मल हो जाता है ।**

मंनु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइ ॥ (पृ. ९१९)

पवित पावन से जन साचे एक सबदि लिव लाई ॥ (पृ. ९१०)

सबदि रते से निरमले चलहि सतिगुर भाइ ॥ (पृ. २३४)

सबदे मनु तनु निरमलु होआ हरि वसिआ मनि आई ॥ (पृ. ६०१)

**तूं आपि निरमलु तेरे जन है निरमल
गुर कै सबदि वीचारे ॥** (पृ. ११५५)

**गुर सबदी मनु निरमलु होआ
चूका मनि अभिमानु ॥** (पृ. १३३४)

अपनी आन्तरिक 'ज्योति' को **'परम-ज्योति में मिलाना, मनुष्य जन्म का मुख्य प्रयोजन या निशाना है** । इस लिए **शबद की कमाई द्वारा ही, जिज्ञासु अह्म को साध-संगति में दूर करके, परमात्मा में समा सकता है ।**

आतम रामु रामु है आतम **हरि पाईऐ सबदि वीचारा हे ॥** (पृ. १०३०)

अंतरि जोति सबदि सुखु वसिआ **जोती जोति मिलाइआ ॥** (पृ. १०६८)

नानक बखसि मिलाइअनु सचै सबदि हदूरि ॥ (पृ. ८५४)

गुर कै सबदि सदा सचु जाता मिलि सचे सुखु पावणिआ ॥(पृ. १२८)

साध–संगति में **'गुर–शबद' की कमाई द्वारा,** जिज्ञासु को **अनेक दैवीय गुणों रूपी 'हीरे' एवं 'जवाहरात' प्राप्त हो जाते हैं । दूसरे शब्दों में, प्रभु–प्रेम द्वारा, 'आढ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा' की भाँति, जिज्ञासु दैवीय सम्पति या 'खजाने' का मालिक बन जाता है ।**

तिसहि परापति लालु जो गुर सबदी रसै ॥ (पृ. ९६३)

अंदरि हीरा लालु बणाइआ ॥
गुर कै सबदि परखि परखाइआ ॥ (पृ. ११२)

पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ॥
ता मेरै मनि भइआ निधाना ॥ (पृ. १८६)

पिछले लेखों में बताया जा चुका है कि **'शबद' में प्रभु के सारे सूक्ष्म एवं स्थूल गुण मौजूद** हैं ।

हर धर्म एवं धार्मिक ग्रंथ में, **'नाम' एवं 'नाम' की 'प्राप्ति' का वर्णन आता है ।** इस लिए, गुरबाणी की रोशनी में, **'शबद' और 'नाम' संबंधी विचारों को स्पष्ट करना जरूरी बन जाता है ।**

सबदे ही नाउ ऊपजै सबदे मेलि मिलाइआ ॥ (पृ. ६४४)

गुरमुखि बाणी नामु है नामु रिदै वसाई ॥ (पृ. १२३९)

अंतरि सबदु अपारा हरि नामु पिआरा
नामे नउ निधि पाई ॥ (पृ. ५६९)

'शबद' और 'नाम' दोनों ही–एक ही 'आत्म–प्रकाश' के प्रतीक और प्रकटाव है ।

रात के घोर अँधकार में हमें छायाचित्र दिखायी पड़ते तथा भ्रम–भुलाव उत्पन्न होते हैं, हम अनेक गलतियाँ करते हैं, ठोकरें खाते हैं और अनन्त कीड़े, मकौड़े, मच्छर, साँप, चोर, डाकू आदि हमारे ऊपर **हमला करते हैं ।**

परन्तु जब **सूर्य उदय होता है** तो :–

अँधकार अपने – आप दूर हो जाता है ।
कीड़े – मकौड़े अलोप हो जाते हैं ।
चोर, डाकू भाग जाते हैं ।
मच्छर, साँप आदि छुप जाते हैं ।
छायाचित्र नहीं दिखायी देते ।
भ्रम – भुलाव दूर हो जाते हैं ।
ठोकरों से बच जाते हैं ।
अँधकार की अनेक व्याधियों की मुश्किलों से बच जाते हैं ।

इसके इलावा सूरज की **रोशनी के सभी गुण**, जैसे प्रकाश, गर्मी, शक्ति, जीवन – रौं जैसी अनेक **बरकतों से लाभ ले कर** हम अपना **जीवन सुखदायी, प्रफुल्लित और सफल बनाते हैं ।**

ठीक इसी तरह – हमारे अन्र्तगत मन की हालत है ।

मन को माया के घोर अँधकार में 'अहम्' का 'भ्रम – भुलाव' पड़ा हुआ है, जिस कारण हम अनेक दुख क्लेश भोगते रहते हैं और अपना **'हीरे' जैसा जन्म व्यर्थ गवाँ रहे हैं ।**

हीरे जैसा जनमु है कउडी बदले जाइ ॥ (पृ. १५६)

पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥ (पृ. १३३)

'साध – संगति' द्वारा हमारी मायिकी नींद खुलती है और 'नाम – सिमरन' से **'शबद' का हमारी अंतर – आत्मा में 'प्रकाश' होता है,** जिस की रोशनी से माया के अनेक **भ्रम – भुलाव उड़ जाते हैं** । इस प्रकार हमारे अंतर – आत्मा में, 'शबद' अथवा **'नाम' के अनेक 'गुण' और बरकतें प्राप्त व प्रवेश** होती हैं ।

इस तरह हमारा जीवन – 'लोक सुखी' और 'परलोक सुहेला' हो सकता है ।

(क्रमशः ....)